CW

[redacted]

paper I
Ancient India
Date:- 17.02.2022

Dr Deepak Kumar Ranjan
Guest professor,
S.R.A.P College, Chakia

हर्षवर्धन : सांस्कृतिक योगदान

हर्षवर्धन ने जिस प्रकार राजनीतिक स्तर पर एक
सफल शासक की भूमिका निभाई। उसी तरह उसने
सांस्कृतिक उत्थान के लिये प्रयास किए। अपने शासन
काल में उसने शिक्षा, साहित्य, कला एवं धार्मिक
सहिष्णुता के उत्थान के अनेकानेक प्रयास किये।

सोनीपत के मोहर की मुद्रा तथा मधुबन
शिलालेख से ज्ञात होता है कि हर्ष के पूर्वज सूर्योपासक
थे। हर्ष भी अपने जीवन के प्रारंभिक काल में
शैव धर्म को मानता था। बांसखेड़ा ताम्रपत्र तथा नालन्दा
एवं सोनीपत से प्राप्त मुद्रा में उसे महेश्वर
कहा गया है। आगे ह्वेनसांग के प्रभाव से उसने
बौद्ध धर्म के प्रभाव से उसने बौद्ध धर्म के महायान
शाखा को अपनाया तथा जीवन के अंत तक वह
इस धर्म का अनुयायी बना रहा। परन्तु इसके
इस व्यक्तिगत धर्म का राजकीय धर्म पर कोई
प्रभाव नहीं पड़ा। इस समय उसका राजकीय धर्म
था सर्वधर्म समभाव। अभिलेखों से ज्ञात होता है
कि उसने सभी धर्मों तथा पंथों को समान संरक्षण
दिया।

हर्षवर्धन की रुचि शिक्षा तथा साहित्य के
विकास में भी रही। अपने राज्य में उसने अनेक
शिक्षा केन्द्रों के विकास में आर्थिक सहयोग दिया
उसने नालंदा विश्वविद्यालय के संचालन के लिये
लगभग 100 गाँव अनुदान में दिये थे। हर्षवर्धन के
दरबार में क्लासिकल संस्कृत का विकास हुआ
वह स्वयं भी एक विद्वान था। उसे ही रत्नावली,
प्रियदर्शिका, तथा नागानंद जैसे ग्रंथों की रचना
का श्रेय दिया जाता है। वह विद्वानों का महान संरक्षक
था। बाणभट्ट, मयूर, तथा मातंग दिवाकर आदि उसके
दरबार के महत्वपूर्ण विद्वान थे। बाणभट्ट उनका
दरबारी कवि था। उन्होंने हर्षचरित तथा कादम्बरी
की रचना की। मयूर ने 'सूर्यशतक' नाम से

सौ श्लोको का संग्रह किया। मातंगदिवाकर की किसी रचना के बारे मे ज्ञात नहीं हो पाता है।

ह्वेनसांग ने हर्षवर्द्धन के लोक-कल्याणकारी कार्यो का भी वर्णन किया है जिसमें उसके उल्लेख किया है कि हर्ष ने सड़को की सुरक्षा का प्रबंध किया तथा इसके लिये पुलिस तथा गुप्तचर की व्यवस्था की। यात्रियों की सुविधा के लिए उसने जगह-जगह विश्रामालय भी बनवाये। यद्यपि इसी काल मे राजकीय यात्री ह्वेनसांग के दो बार लूटने का उल्लेख भी उसके यात्रा विवरण मे मिला है। इसका कारण माना जा सकता है कि अन्य क्षेत्रिय राज्यों मे कानून व्यवस्था की समस्या होगी। हर्ष को एक महान निर्माता भी माना जाता है उसके काल मे अनेक विहार, चैत्य एवं मंदिरों का निर्माण किया गया। हर्ष ने कन्नौज की सभा मे भव्य बुद्ध मूर्ति को प्रतिष्ठित किया। आधुनिक शाहाबाद ~~जिला~~ जिले के मुण्डेश्वरी का अष्टकोणिक मंदिर, ~~राम~~ रामपुर जिले के राम-लक्ष्मण मंदिर, कन्नौज का देवाराम तथा नालंदा मे 100 फीट ऊँचा पीतल के विहार का निर्माण का श्रेय हर्ष को ही है।

उसकी दानशीलता की प्रशंसा भी चीनी यात्री ह्वेनसांग की विवरण से बोध होता है। ह्वेनसांग करता है कि वह प्रत्येक पाँच वर्ष मे वर्तमान उत्तर प्रदेश के प्रयाग मे एक धर्म संसद का आयोजन करता था जिसमें वह सभी धन को दान कर देता था। ~~अप~~ अपरिग्रह का वह एक प्रकार से संदेश प्रजा को देता था। इस प्रकार सांस्कृतिक के सिद्धांत का विलक्षण व्यक्तित्व के रूप मे सामने आता है। इस प्रकार हर्ष अपने काल का

C.W

B.A - paper - III
Medieval India

Date - 19.02.2022

Dr Deepak Kumar Rajak
Guest professor
S.R.A.P. College
Mau

सल्तनत कालीन भू-राजस्व प्रशासन

प्राचीन काल से ही भारत में भू-राजस्व के निर्धारण में भूमि-माप की पद्धति कायम रही थी। किन्तु आगे चलकर जब राज्य का नियंत्रण कमजोर हुआ तो भूमि-माप की पद्धति छूट गयी थी। फिर जब तुर्कों का आगमन हुआ तो आरम्भ में उन्होंने कोई स्पष्ट भू-राजस्व पद्धति का विकास नहीं किया अपितु वे एक तरह से प्रबन्धन के माध्यम से हिन्दू शासकों से, भू-राजस्व की वसूली करते रहे, उनको एक सैनिक दबाव बनाकर उससे कुलीन वर्ग के रूप एक वार्षिक नजराना की राशि प्राप्त करता रहा अब भी हिन्दू कुलीनों इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्र में भू-राजस्व व्यवस्था का वर्चस्व बना रहा तथा बँटाई पद्धति प्रचलित रही। उसमें कई प्रकार की बँटाई पद्धति तथा कानकूत बटाई अथवा के लिए नसक गल्ला बख्शी।

किन्तु जब राज्य की आवश्यकता बढ़ी एवं जब प्रशासनिक तथा सैनिक खर्च में वृद्धि हुई तो फिर राजस्व की यह रकम अपर्याप्त पड़ने लगी। अतः अलाउद्दीन खिलजी ने दोआब क्षेत्र के लिए भू-राजस्व को कम करने की तथा इसके 'मुसाहत' की पद्धति लागू की तथा इसके माध्यम से किसानों के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध स्थापित करना चाहा। आगे M.BT ने भूमि पैमाइश की पद्धति को महत्व दिया। यथा कि इसका विस्तार साम्राज्य के अन्य क्षेत्रों में करना चाहा। यद्यपि अन्य सुल्तानों ने इस पद्धति को अपनाने में अधिक दिलचस्पी नहीं दिखाई। एक दृष्टि से देखा जाए तो मसाहत पद्धति का विकास भी प्रशासनिक केन्द्रीकरण में एक कारक बन जाता है

07.2021

History of Ancient India

Dr Deepak Kumar Rajan
Guest professor
S.R.A.P. College,
Chakiya

संगम काल

संगम शब्द मिथक है या वास्तविकता

संगम साहित्य

संगम साहित्य को मोटे तौर पर दो समूहों में बाँटा जा सकता है:- आख्यानात्मक और उपदेशात्मक आख्यानात्मक ग्रंथ मेलकन्कु अर्थात 18 मुख्य ग्रंथ कहलाते है। उपदेशात्मक ग्रंथ किलकन्कु अर्थात 18 लघु ग्रंथ मे, निण्नै, पदित्तुपत्तु, परिपाडल, अहनानूरू पुरुनानूरू आदि प्रमुख है 'पदित्तुपत्तु' में चेर राजाओं की प्रशंसा मे 8 कविताएँ है तो "परिपाडल" मे देवताओं की प्रशंसा मे 20 कविताएँ है

किलकणक्कु मे 18 लघु ग्रंथों का संग्रह है तमिल साहित्य की इसरी तह मे आर्य प्रभाव बहुत अधिक मात्रा मे दृष्टिगोचर होता है यह जैन प्रभाव भी देखने को मिलता है किलकान्कु साहित्य भी मित्रुक्कु है। इनमें तिरुक्कुरल तथा नलदियार महत्वपूर्ण है। तिरुक्कुरल को तमिल साहित्य का बाइबल कहा गया है।

संगम काल के रचनाओं के वर्गीकरण के अन्य आधार भी है जैसा कि इसका विभाजन "अगम" तथा "पुरम" मे हुआ है अगम अतरंग यानि प्रेम सबंध पुरम - बाह्य अथवा राजाओं की प्रशंसा से सम्बन्धित है इसका विभाजन क्षेत्र के अनुसार भी किया गया है संपूर्ण साहित्य को 5 तिणै मे विभाजित किया गया है जैसे।—

(1) कुरुंजी → पर्वत क्षेत्र

(2) पाल्लई → निर्जल क्षेत्र

(3) मुल्लई — जंगल क्षेत्र
(4) मरुदम् — कृषि क्षेत्र
(5) नेगतल — तटीय क्षेत्र

संगम साहित्य पर 6वीं सदी में आर्यों का प्रभाव संपूर्ण तमिल भूमि पर दिखा गया। तमिल कवियों ने भी बड़ी-बड़ी कविताएं लिखनी प्रारंभ कर दी। इन्हें ~~संस्कृत~~ संस्कृत नाम की तरह महाकाव्य से संबोधित किया गया। इस श्रेणी का प्रथम ग्रंथ शिलप्पादिकारम् है। इसके कविता का परंपरागत लेखन महान चोल सम्राट करिकाल के पौत्र इलंगोवादिगल ने किया ? इसमें कोवलन तथा कण्णगी की दुखांत गाथा है। काव्य के अंत नायिका माधवी बौद्ध धर्म ग्रहण कर लेती है इस रचना तमिल जनता का राष्ट्रीय काव्य माना जाता है। इस ग्रंथ में श्रीलंका के शासक गजबाहु की भी चर्चा की गई है। माना जाता है कि वह उस समय उपस्थित था जब शेनगुट्टुवन ने कण्णगी के लिये एक मंदिर स्थापित किया था। दूसरा महाकाव्य मणिमेखलई है। इसके रचनाकार सत्तनार नामक कवि है। इसमें माधवी तथा कोवलन से उत्पन्न पुत्री मणिमेखलई और राजकुमार उदयकुमारन के मध्य के प्रेम संबंधों की चर्चा है विभिन्न घटनाक्रम के मध्य मणिमेखलई भी माता की तरह बौद्ध धर्म ग्रहण कर लेती है तिरुक्कदेव द्वारा लिखित जीवक चिंतामणि तीसरा महाकाव्य है इसमें जीवक जैसे योद्धा के अद्भुत कार्य वर्णन किया गया है किन्तु यहाँ भी दिखाया जाता है कि वह अंत में जैन धर्म ग्रहण कर लेता है

Paper- IV Date -

History of Modern Europe 18.02.2021

रूस की क्रांति

Dr Deepak kumar Raja
Guest professor
S.R.A.P. College, Muz

परिचय

रूस की क्रान्ति विश्व इतिहास में एक महत्वपूर्ण विभाजक रेखा बन जाती है। इसने विश्व राजनीति में सर्वहारा तथा बुर्जुआ के बीच विभाजन को एक संस्थागत आधार प्रदान कर दिया। एक दृष्टि से इसने फ्रांस की क्रान्ति को पूर्णता प्रदान की तथा कुछ ऐसे प्रश्नों का भी उत्तर देने का प्रयास किया जो फ्रांस की क्रांति के मध्य अनुत्तरित रह गये थे। रूस की क्रांति के बाद व्यवस्था को एक गहरी चुनौती मिली क्योंकि विश्व स्पष्ट रूप में दो भिन्न खेमों में विभाजित हो गया था।

कारण :-

रूस में एक कठोर राजनीतिक संरचना स्थापित थी। 19वी सदी के मध्य पश्चिमी यूरोप की राजनीतिक संरचना परिवर्तित हो चुकी थी व राजतंत्र की शक्ति सीमित की जा चुकी थी परन्तु रूसी राजतंत्र अपना विशेषाधिकार छोड़ने को तैयार नहीं था। यद्यपि 20वी सदी के आरम्भ में रूस में संस्थागत परिवर्तन आरम्भ हो गये थे परन्तु अभी भी रूसी लोगों को आम नागरिक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं थी। फ्रांस के समाज के तरह रूसी समाज भी विभाजित था। समाज का विभाजन कुलीन एवम् दासों के बीच था। एक रूसी शासक जार अलेक्जेंडर ने 1860 में कृषि दासता को समाप्त कर दिया। फिर भी वहाँ दासों की स्थिति अच्छी नहीं हुई क्योंकि उनके बीच भूमि का पुनर्वितरण नहीं किया गया था।

19वी सदी के अन्तिम दशकों में रूस में कृषि एवम् औद्योगिक प्रसार की प्रक्रिया आरम्भ हो गयी थी। एक महत्वपूर्ण विशेषता सर्गेई विट्टे के अन्तर्गत रूस के औद्योगिकरण को प्रोत्साहन दिया गया था किन्तु इस औद्योगीकरण ने रूसी जनता को कुछ वर्गों को असंतुष्ट कर दिया।

स्टालिन के अन्तर्गत रूस में कृषि सुधार की प्रक्रिया को प्रोत्साहन मिला परन्तु जैसा कि स्वयं स्टॉलिन ने ही घोषित किया था। उसके कृषि सुधार का उद्देश्य धनी किसानों का एक वर्ग पैदा करना है जो एक तरफ औद्योगिक वस्तुओं के बाजार का काम करेगा वहीं दूसरी तरफ समाज को स्थायित्व प्रदान करेगा।

रूसी औद्योगीकरण पश्चिमी पूँजीवादी औद्योगीकरण से भिन्न था। यहाँ कुछ ही क्षेत्र में महत्वपूर्ण उद्योगों का केन्द्रण हुआ। इस तरह से रूस तरह इस औद्योगीकरण ने जहाँ एक तरफ इसने सर्वहारा वर्ग को जन्म दिया वहीं दूसरी तरफ इसने सर्वहारा वर्ग में वर्गीय चेतना तीव्र कर दी। इसके परिणाम स्वरूप 19वीं सदी के अन्त में दो दल अस्तित्व में आये उदाहरण के लिए, 1895 में सोसल डेमोक्रेटिक पार्टी का गठन हुआ। इसने औद्योगिक मजदूरों को अपना आधार बनाया। फिर 1901 में सोशल रेवोल्यूशनरी पार्टी का गठन हुआ। इसने किसानों को अपना आधार बनाया। 1903 में साधन एवं अनुशासन के मुद्दे पर सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी में फूट पड़ गयी। इसके परिणाम स्वरूप मेनशेविक व बोलशेविक दल अस्तित्व में आये।